21 / 10 / 75 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

बेहद की वैराग्य वृत्ति के आधार से सम्पूर्ण
विश्व परिवर्तन होने का अनुभव

➢➢ प्रभु मिलन के आनंददायी क्षण...

➳ _ ➳ मैं प्रभु मिलन की प्यास लिए बाबा के सम्मुख बैठी हूं...

→ एक मैं और एक मेरे बाबा...

→ शीतल चांदनी की किरणों के समान बाबा का स्नेह मुझ आत्मा पर बरसने लगा ह.

→ अलौकिक... अद्भुत... अवर्णनीय... ये प्रभु प्रेम ह.

→ मेरी आत्मा इस रस में भीग रही ह.

→ अपनी सुधबुध खोती जा रही ह.

→ प्रभु प्रेम के आगे अब ओर कोई सुख या वभव मुझ आत्मा को आकर्षित नही करते हैं...

- ये प्रभु प्रेम ही आधार हवराग्य वृत्ति का...

➳ _ ➳ मेरी लगन की अगन बढ़ती जा रही ह.

→ मुझे इस दुनिया से दूर भगवान की बनाई दुनिया में जाना ह.

➳ _ ➳ इस पुरानी दुनिया से मुझ में वशाग्य आ गया ह.

→ मैं मालिक आत्मा हूँ...

→ मैं महारथी आत्मा हूँ...

→ सेवाधारी आत्मा हूं...

→ अपनी वशाग्य वृत्ति के वायब्रेशनस विश्व में फला रही हूं...

→ एक बाप के लव में लवलीन अवस्था बनती जा रही ह.

→ महादानी बन शक्तियों का दान अन्य आत्माओं के उन्नति अर्थ दे रही हूं...

→ मेरा हर कर्तव्य अब विश्व कल्याण के लिए ह.

➢➢ सारे विश्व की आत्माओं का परिवर्तन ही नई दुनिया को लाने में सहायक होगा...

➳ _ ➳ धीरे धीरे विश्व की आत्माओं का भी परिवर्तन होता जा रहा ह.

→ बेहद के वशाग्य का संगठन दिखाई देने लग गया ह.

→ ऐसा संगठन ही नयी दुनिया की तिथि तारीख को लाने में सहायक होगा...

→ अब ये संगठन तशार हअपने जशे नये संगठन बनाने के लिए...

▶ विश्वपरिवर्तन के लिए...